क़ुरआन में अपनी तलाश...

लेखक– मौलाना यूसुफ इस्लाही

अनुवाद –

डा0 रफ़ीक़ अहमद

किताब का नाम	:	क़ुरआन में अपनी तलाश
लेखक	:	मौलाना यूसुफ़ इस्लाही
अनुवाद	:	डा० रफ़ीक़ अहमद M.: 9451767474
हिन्दी एडीशन	:	2020
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	12
कम्पोज़िंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर–फ़तेहपुर
क़ीमत	:	**5/-**

प्रकाशक

अल्फाबेट पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

इलाहाबाद

●

मिलने का पता :

असद बुक डिपो

11-C, याकूतगंज, नखासकोना-इलाहाबाद

Mob. : 9307408918

अल्लाह तआला ने क़ुरआन इसलिये नाज़िल किया है कि इसको समझ कर पढ़ा जाये उसमें ग़ौर किया जाये और इससे नसीहत हासिल की जाये। अल्लाह तआला का इर्शाद है ''यह एक बड़ी बर्कत वाली किताब है जो ऐ मुहम्मद सल्ल० हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है ताकि यह लोग इसकी आयत पर ग़ौर करें और अक़्ल व फिक्र रखने वाले इससे सबक लें'' (सूरह साद–29)

कुछ लोग जो अरबी भाषा और उसकी साहित्यिक बारीक़ियों से वाक़िफ़ हैं वह तो सीधे तौर से इसमें ग़ौर करते हैं, और आज जो अरबी भाषा नहीं जानते वह तर्जुमों और तफ़सीरों की मदद से समझने की कोशिश करते हैं और बतौर अपने उस नेक अमल पर ख़ुश होते हैं कि हम अल्लाह की किताब को समझ कर पढ़ने की कोशिश करते हैं। मगर इनमें से अकसर लोग कभी–कभी ज़बरदस्त ग़लती करते हैं, जानबूझ कर करते हैं या अनजाने में, यह तो अल्लाह ही जानता है मगर इस ग़लती की वजह से वह क़ुरआन के फ़ैज़ से वंचित रहते हैं और किताबे हिदायत पढ़ने के बावजूद हिदायत से दूर रहते हैं।

दरअस्ल क़ुरआन समझ कर पढ़ने वाले यह मालूमात ज़रूर रखते हैं या हासिल करने की कोशिश करते हैं कि क़ुरआन पाक जिस वक्त नाज़िल हो रहा था, उस वक़्त क़ुरआन के बहुत से मुख़ातब गिरोह थे। मुशरिक थे, मुनाफ़िक थे, यहूदी और ईसाई थे, अहले ईमान थे, और कुछ वह लोग थे जो इताअत करने वाले तो बन गये थे लेकिन ईमान से खाली थे, यह मालूमात कभी–कभी फ़ायदेमंद होने के बजाये नुक़सानदेह हो जाती है और हक़ व हिदायत से फ़ायदा उठाने में रुकावट बन जाती है ''ऐ रोशनी–ए–तबअ तू बरमन बला शुदी'' ये मालूमात रखने वाला इन मालूमात ही की वजह से इन हिदायतों से खुद को वंचित कर लेता है जिनको क़ुरआन में पढ़ता और समझता है। लेकिन यह सोच कर अपने आपको इन हिदायतों से अलग कर लेता है कि

यह आयत तो फ़लां गिरोह के बारे में नाज़िल हुई है, यह आयत तो फ़लां गिरोह की शान में है, इस आयत में तो मुशरिकों का तज़्किरा है, इस आयत में तो मुनाफ़िक़ों का हाल बयान किया गया है, इस आयत में तो फ़लां गिरोह को सचेत किया गया है। इस आयत में फ़लां गिरोह का अंजाम बयान किया गया है वग़ैरा-वग़ैरा। इस तरह वह क़ुरआन के बहुत बड़े हिस्से को अपनी ज़ात से अलग-अलग करके अपने लिये बेफ़ायदा बना लेने का भयानक जुर्म करता है। जानबूझकर या अन्जाने में वह यह जुर्म और ग़लती बराबर करता रहता है। मगर वह इस गुमान में रहता है कि वह क़ुरआन समझ कर पढ़ता है। मुख़्तलिफ़ तर्जुमों और तफ़सीरों की रोशनी में ग़ौर व फ़िक्र भी कर रहा है और बहेरहाल क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र मुसलमान के लिये बड़ी खुशनसीबी है मगर यह खुश फ़हमी और गुमान उसके हक़ में क़ुरआन करीम से फ़ायदा उठाने की राह में बड़ी रुकावट साबित होता है और वह पढ़ने समझने के बावजूद हिदायत से महरूम रहता है।

बेशक हम मोमिन हैं, मुस्लिम हैं। कुफ्र व शिर्क, निफ़ाक़ और गुनाहों से हमें नफ़रत है मगर जब क़ुरआन में काफ़िरों और मुश्रिकों के मुश्रिकाना और क़ाफ़िराना अमल का तज़्किरा हो रहा हो, जब मुनाफ़िकों की बदअहदी और मुनाफ़िक़ाना आमाल का ज़िक्र हो रहा हो, जब किसी गिरोह की नाफ़रमानी, गुनाह और सरकशी का बयान हो रहा हो, जब मुनाफ़िक़ों के बुरे अन्जाम का तज़्किरा हो रहा हो, जब जहन्नम में ले जाने वाले गुनाहों का ज़िक्र हो रहा हो, जब ऐसे गिरोहों को चेतावनी दी जा रही हो जो हक़ को पा लेने के बाद हक़ से वंचित हो रहे हों, या हक़ का दावा करने के बावजूद आगे बढ़कर हक़ को क़ुबूल करने के बजाये हक की मुख़ालफ़त कर रहे हों, तो उन आयतों को मुख़्तलिफ़ गिरोहों पर चस्पा करके आगे बढ़ जाने और ज़ेहन को झटका देकर सोचने और जाइज़ा लेने के बोझ से हलका कर लेने की तबाहकुन ग़लती

करने के बजाये रुक कर गम्भीरता से उन बुरे आमाल और बुरे किरदारों की रूपरेखा पर ग़ौर करना चाहिये और फिर उसके आइने (दर्पण) में बेलाग अंदाज़ में अपने वजूद का जाइज़ा ले कर ख़ुदा का शुक्र अदा करना चाहिये कि हमें अपने ऐबों से वाक़िफ़ होने और अपने किरदार और चरित्र को पाक व साफ करने का मौक़ा मिला। यह बिल्कुल नामुम्किन है कि एक मोमिन और मुस्लिम अपनी ग़फ़लत, लापरवाही या जज़्बात के दबाव और नफ़्स की मौका परस्ती के नतीजे में वे आमाल कर बैठे जो काफ़िरों, मुशरिकों, मुनाफ़िक़ों वाले आमाल हैं और जिनका कोई सम्बंध ईमान व इस्लाम से नहीं है। इस तरह सोचने की अगर हम आदत डालें और क़ुरआन पर सोचने का यह अंदाज़ इख़्तियार करें तो क़ुरआन पाक का कोई हिस्सा और कोई आयत हमसे ग़ैर-मुताल्लिक न होगी, हर हिस्सा हमारे लिये होगा और हर आयत को हम अपना मुख़ातब समझेंगे और पूरे क़ुरआन का ख़िताब ही हम से होगा।

यह बड़ी नादानी, ग़फ़लत और बेअक़्ली अपने नफ़्स पर बदतरीन ज़ुल्म है कि हम क़ुरआन के बड़े हिस्से को दूसरों पर चस्पा करके खुद को उसके हिदायत से महरूम कर लें और जब पढ़ने और समझने बैठें तो यह कहते चलें जायें कि यह मुनाफ़िकों के बारे में है, यह मुशरिकों के बारे में है, यह मुनाफ़िकों का बयान है यह यहूदियों से संबंधित है और यह ईसाइयों से, यह मदीने के उन देहातियों से ख़िताब है जिनके दिलों में अभी ईमान दाखिल नहीं हुआ था।

सवाल यह है कि क़ुरआन का एक बहुत बड़ा हिस्सा जब दूसरों के लिये है तो हमारा तज़्किरा कहां है, किन आयतों का ख़िताब हमसे है और वे कौन सी आयतें हैं जो हमारे लिये हैं, क्या वे आयतें जहां यह ज़िक्र है कि अल्लाह को उन मुजाहिदों पर प्यार आता है जो उसके रास्ते में सीसा पिलाई हुई दीवार की तरह

पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं, या वह आयतें हमारी शान में नाज़िल हुई हैं जहां कहा गया है कि राहे हक़ में शहीद होने वाले खुदा के हुज़ूर ख़ुदा के इनाम व फ़ज़्ल पर ख़ुश व ख़ुर्रम हैं और वहां रिज़्क़ पा रहे हैं, या इन आयतों में हमारा ज़िक्र है जो राहे हक़ में जान व माल क़ुरबान करने के बाद खुदा की रिज़ा और ख़ुशी का परवाना पाकर जन्नत के सदाबहार बाग़ों में मसनदों पर जलवा अफ़रोज़ हैं। आख़िर खुदा की इस किताब में कहां हमारा तज़्किरा है। या हमारा तज़्किरा उन आयतों में हैं जहां हमारे रब ने हमें पुकार कर कुछ आदेश दिये हैं, क्या हमारा रब वह है जो सिर्फ क़ानून और हुक्म देने वाला एक हाकिम है और उससे हमारे सम्बंध का बस यही अंदाज़ है।

अगर हमारा ख़्याल यह है कि जिन आयतों में खुदा के तक़्वा का हक़ अदा करने वालों, उसकी राह में सीसा पिलाई हुई दीवार की तरह पंक्तिबध होकर जिहाद करने वालों और जान व माल और सब कुछ क़ुर्बान करने वालों की मुहब्बत का एतेराफ़ और तारीफ़ की है, वह हमारा ही तज़्किरा है और कोई एक आयत भी ऐसी नहीं जिसको हम बस दूसरों पर चश्पा करके मुत्मईन हो जायें कि हमने क़ुरआन का हक अदा कर दिया। ख़ुदा का इर्शाद है ''लोगों! हमने तुम्हारी तरफ़ एक ऐसी किताब भेजी है जिसमें तुम्हारा ही ज़िक्र है क्या तुम समझते नहीं हो'' (सूरह अंबिया आयत-10) यानी इसमें तुम्हारा ही हाल बयान किया गया है, तुम्हारे ही मामलाते ज़िन्दगी, तुम्हारी ही फ़ितरत, मिज़ाज, हुलिया और आगाज़ व अंजाम पर गुफ्तगू है, इन्सानी नफ़सीयात, सीरत, किरदार और अखलाक़ के अच्छे और बुरे पहलू बयान किये गये हैं, और हर जगह तुम्हें सम्बोधित करके अच्छे किरदार अपनाने और बुरे किरदार और बुरे अंजाम से बचने की ताकीद और नसीहत की गयी है। अल्लामा इक़बाल ने क्या अच्छी बात कही है-

तिरे ज़मीर पर जब तक न हो नुज़ूले किताब
गिरह कुशा है न राज़ी न साहिबे कश्शाफ़

दरअस्ल ईमान व इस्लाम कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि एक बार आदमी ज़बान से कह दे कि मैं मोमिन हूँ और मुस्लिम हूँ और बस फिर वह जो चाहे करे वह मोमिन और मुस्लिम है। मोमिन और मुस्लिम दो नाम नहीं हैं कि रख लिया जाये, बल्कि ये करने के काम हैं- ईमान लाना पड़ता है, इस्लाम लाना होता है और बार-बार हर लम्हा यह तक़ाज़ा सामने आता है कि इस्लाम लाओ। इस्लाम लाने वाले को क़दम-क़दम पर फ़ैसला करना होगा कि मैं क्या करूँ या न करूँ ? क्या करूँ कि मैं इस्लाम लाने वाले मुसलमानों में गिना जांऊ और क्या करूँ कि मेरा इस्लाम महफ़ूज़ रहे, हर लम्हा यह फ़िक्र, यह बेचैनी, यह फ़ैसला, यह चुनाव, यह क़दम, यह परहेज़ और यह तर्क और इख़्तियार ज़रूरी है। इस्लाम पर बाकी रहने और ग़ैर इस्लाम से बचने के लिये, और हर आने वाली घड़ी में या आप इस्लाम के रूख पर बढ़ रहे हैं, या कुफ्र व निफ़ाक़ के रूख पर, इसलिये कि ज़िन्दगी नाम है लगातार हर्कत या परहेज़ का, तर्क या इख़्तियार का, रद्द या क़ुबूल का और यही अमली फैसले तय करते हैं कि आप इस्लाम ला रहे हैं या ग़ैर इस्लाम की तरफ जा रहे हैं। और सोचें कि निफ़ाक़ का यह रोग आपके ईमान व इस्लाम पर ख़ामोश हमला तो नहीं कर रहा है। आपके फ़िक्र व अमल में कोई ऐसी बुराई तोपैदा नहीं हो गयी है और फिर कोशिश में लग जायें कि आपका ईमान निफ़ाक़ की बीमारी से सुरक्षित रहे। निफ़ाक़ ईमान का बदतरीन दुश्मन है, दबे पाँव आता है और बहुत ही मक्कारी से हमला करता है। आदमी को एहसास नहीं होता मगर वह इस ज़ालिम का शिकार हो चुका होता है। फ़िक्र व अमल के बहुत से पहलुओं में उसकी नुमाइन्दगी कर रहा होता है, लेकिन ज़बान से निफ़ाक़ की बुराई करते नहीं थकता। इस छुपे दुश्मन के

हमलों के प्रभावों का बारीक़ी से जायज़ा लेना चाहिये और अपने साथ ख़ैरख़्वाही करते हुये अपनी ज़ात और अपने ख़ानदान व समाज पर फ़िक्र व तशवीश की निगाह डालनी चाहिये। कहीं ऐसा तो नहीं है कि आप बहुत सी मुनाफ़िक़ाना आदतों और तरीकों को ग़फ़लत से सहन कर रहे हों, बहुत सी बुराइयों से समझौता कर रखा हो और बहुत सी बुराईयों को तावीलों और बहानों से बुराई की सूची से निकाल करके धीरे-धीरे अच्छाई की सूची में डाल लिया हो, क़ौल व अमल का फ़र्क निफ़ाक़ की एक खुली हुई बीमारी है। बुराईयों पर उकसाना, बुराईयों को रिवाज देना, और भलाईयों की राह मारना मुनाफिकों का पसन्दीदा अमल है, उनके समाज में एक दूसरे से दिल फटे होते हैं। यह बुग्ज़ व हसद और एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रत व हकारत के जज़्बात के रोगी होते हैं। बढ़-चढ़ कर दावे करते हैं मगर वक़्त आने पर दीन की राह में एक पैसा खर्च करते हुये उनका दिल बैठने लगता है और कोई फांस बर्दाश्त करने की हिम्मत व हौसला नहीं होता, यह ख़ुदा और रसूल का नाम तो लेते हैं लेकिन ताल्लुक़ात और माली मामलात में खास तौर पर यह अपने नफ़्स और ख़्वाहिशात के बन्दे होते हैं। यह दीन का नाम तो लेते हैं लेकिन दुनयवी मामलों में बदतरीन दुनिया दारों से बहुत आगे होते हैं। बतौर मिसाल यह चन्द मोटी-मोटी ख़राबियां क़ुरआन की रोशनी में यहां सामने लायी गयी हैं, निष्पक्ष जाइज़ा लीजिये अपना भी, अपने ख़ानदान का भी और अपने मुस्लिम समाज का भी, आप किस मुक़ाम पर खड़े हैं और फिर सोचिये कि मुनाफ़िक़ों के आमाल व अख़लाक़ पर टिप्पणी करने वाली हक़ीक़त यही है कि क़ुरआन के हर-हर हिस्से का खुद को मुख़ातब बनाये बग़ैर आप क़ुरआन पढेंगे तो न क़ुरआन के साथ इन्साफ़ कर सकेंगे और न अपने साथ। क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र का यह अंदाज़ आप को क़ुरआन से दूर तो कर सकता है, क़रीब नहीं कर सकता और हर्गिज़ इस खुशफ़हमी में न रहें कि आप क़ुरआन को समझ

कर पढ़ने का हक़ अदा कर रहे हैं। आप क़ुरआन फ़हमी की मिठास हर्गिज़ नहीं पा सकते।

क़ुरआन को पढ़ने, समझने और उससे हिदायत पाने का सही तरीक़ा यह है कि आप हर एक आयत को अपने बारे में समझें, हर आयत का मुख़ातब (सम्बोधन) अपनी ज़ात को बनायें और यह तसव्वुर करें कि अल्लाह ने यह आयत मेरे लिये ही नाज़िल की है और दूसरों पर चस्पा करके सुकून महसूस करने की आदत छोड़कर उसको अपनी ज़ात पर चस्पा करने की आदत डालें तो आप देखेंगे कि कहीं मोमिनों का जीवन-चरित्र बयान किया जा रहा है तो अपना जायज़ा लें और क़ुरआन के दिये हुये सांचे में खुद को ढालने के लिये ज़ौक़ व शौक और हौसले के साथ लग जायें। कहीं बुरे अख़लाक़ और दोज़खियों के कर्तूत बयान किये जा रहे होंगे तो अल्लाह से तौबा करें, उसकी पनाह ढूंढे, बारीक़ निगाहों से अपना निष्पक्ष जायज़ा लें और इस तरह का कोई भी दाग़-धब्बा अपने दामने ईमान व इस्लाम में पायें तो उसको साफ़ करने में लग जायें और अपने ज़मीर को मुत्मईन करने की आदत डालें। दुनिया वालों को तो आदमी बहानेबाज़ी और तावीलों से भी संतुष्ट कर देता है। कहीं काफ़िरों और मुश्रिकों के बुरे अन्जाम और उनके अज़ाब का भयानक नक़्शा खींचा जा रहा होगा, ऐसे मौक़े पर आपका दिल कांपने लगे, आँखें आंसुओं से भर जायें, चेहरे पर खुदा का खौफ़ व हैबत के आसार दिखाई दे और आप अपने रब के हुज़ूर गिड़गिड़ायें कि परवरदिगार तू मुझे इस बुरे अन्जाम से मुझे सुरक्षित रख, कहीं सच्चे मोमिनों के नेक अंजाम और आख़िरत की हमेशा-हमेश रहने वाली और बेमिसाल नेमतों और आसानियों का ज़िक्र होगा तो वहां ठहर कर खुदा से दिल की गहराइयों से दुआ मांगें कि परवर दिगार मुझे भी इनमें शामिल फ़रमा। ''कहीं ऐ ईमान वालों'' कहकर पुकारा जा रहा होगा, आप यूँ ही आगे न बढ़ जायें बल्कि

रुक कर सोचें कि कौन पुकार रहा है, मेरा रब, कायनात का मालिक, मालिके कुल पुकार रहा है, मुझे पुकार रहा है और मुझे पुकार रहा है और मुझे ईमान वाला कहकर पुकार रहा है, खुशी से झूम उठें और दिल की ज़बान से रब को जवाब दें कि परवर दिगार तू मुझे ईमान वाला कह कर पुकार रहा है, तुझे मेरे ईमान का ऐतराफ है, तू अगर मुझे ईमान वाला मान ले तो यही तो मेरी कामयाबी और मेराज है, यही तो मेरी आख़िरी तमन्ना है, मुझे तो सब कुछ हासिल हो गया। तूने मुझे ईमान वाला तस्लीम किया है तो अब मैं दिल व जान से ईमान का हर तक़ाज़ा पूरा करूंगा और मैं हरगिज़ उन लोगों में से न हूंगा जो बढ़-चढ़ कर दावे तो करते हैं लेकिन अमल में कोरे साबित होते हैं, कहीं मुनाफ़िक़ों का किरदार, उनके बुरे अख़लाक़ का बयान होगा, आप गम्भीरता से अपने अख़लाक़ व मामलात और रातो-दिन का जाइज़ा लें और एक-एक रोग को दुश्मन की तरह पकड़ कर कुचल डालने की कोशिश करें। मुनाफ़िकों का लफ्ज़ पढ़ कर बेपरवाई से आगे न बढ़े, बल्कि एक-एक बुराई को रुक-रुक कर पढ़ें। क़ुरआन में बार-बार मुख़्तलिफ़ अंदाज़ और मुख़्तलिफ़ पैकरों से हक़ व बातिल, नेकी और बदी, कुफ्र और इस्लाम, इख़लास व निफ़ाक़, तौहीद और शिर्क, इताअत और नाफ़रमानी, एहसानमन्दी और नाशुक्री, परहेज़गारी और खुदा बेज़ारी, आख़िरत पसन्दी और आख़िरत फ़रामोशी, बुरे अख़लाक़ और अच्छे अख़लाक़, अच्छे मामलात और बुरे मामलात, अच्छे किरदार और बुरे किरदार, पाकीज़गी और गन्दगी, दिली बड़कपन और नीचता और ईमानदारी व बेईमानी इन्हीं आमाल और मूल्यों का आपसी टकराव, गुत्थम-गुत्था और हाथापाई नज़र आयेगी और जब तक आपके सीनों में दिल धड़क रहे हैं, आँखों में दम है, दिमाग़ में सोचने-समझने की ताक़त है और जिस्म में तर्क व इख़्तियार की

क़ूव्वत और क़ुदरत है, हर-हर क़दम और हर-हर मोड़ पर आपके ईमान व इस्लाम की आज़माईश है। और इस निरन्तर जंग में आज़माइश बराबर जारी है और रहती दुनिया तक जारी रहेगी। आप लगातार परीक्षा-भवन में हैं और आपको शऊर हो या न हो, आप अपना रोल अदा कर रहे हैं और अल्लाह तआला बराबर आपके बारे में हुक्म सादिर फरमा रहे हैं और आपकी दौड़ व धूप को निगाह में रखकर आपका मालिक आपके दिल को अपनी चुटकी से अपने इल्म व हिकमत के तहत बराबर इधर फेर रहा है और दिल के यह इन्क़िलाबात आपकी ज़िन्दगी और आपकी रूह और दिमाग़ पर असर अंदाज हो रहे हैं। हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० अकसर यह दुआ मांगा करते थे- ''ऐ दिलों के फेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर जमा दे'' तो हम लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० हम आप सल्ल० पर ईमान लाये और जो दीन आप लेकर आये उस पर ईमान लाये, क्या आपको हमारे बारे में भी खौफ़ है (कि हम फिर जायेंगे) इर्शाद फरमाया- ''जी हां ! बेशक इन्सानी दिल रहमान की उंगलियों में से दो उंगलियों में हैं वह जिधर चाहता है उनको फेरता रहता है''

यानी हर इन्सान और ईमान व इस्लाम का दावा करने वाला हर शख़्स इस नाज़ुक मोड़ पर खड़ा है कि उसकी फ़िक्र और जज़्बा, आमाल व हर्कात और रातो दिन की दौड़ धूप के पेशे नज़र अल्लाह ताआला उसके बारे में अपने फ़ैसले देता रहता है और यह फैसला उसके फ़िक्र व अमल के लिहाज़ से कुछ भी हो सकता है। इस नाज़ुक तरीन मुक़ाम पर होने का एहसास व शऊर रखने वाला क्या आसानी के साथ क़ुरआन पढ़ने के दौरान यह कहते हुये बेझिझक आगे बढ़ सकता है कि फ़लां आयत फलां गिरोह के बारे में है और फ़लां आयत, फ़लां गिरोह के बारे में। और फ़लां आयत, फ़लां गिरोह की शान में है। और फलां आयत में फलां गिरोह के

बुरे अन्जाम को बयान किया गया है। फ़लां आयत में यहूदियों और ईसाईयों की बुराइयाँ बयान की गयी हैं और फ़लां आयत में ईसाईयों की गुमराहियां, या उसे सबसे ज़्यादा अपनी फ़िक्र होगी।

दरअस्ल क़ुरआन में जिस-जिस किरदार का भी ज़िक्र है और किरदार की जिस-जिस कमी और बुराई या अच्छाई और भलाई का तज़्किरा है यह किरदार भी और किरदार की यह बुराई और अच्छाई भी हर दौर में पायी गयी है और पाई जाती रहेगी। कोई किरदार या किरदार की कोई बुराई किसी दौर के साथ सीमित नहीं है, हर किरदार हर दौर में पाया जाता है और किरदार की हर बुराई हर दौर में पायी जाती है, इसी तरह किरदार की हर भलाई हर दौर में पायी जाती है और आदमी मरते दम तक लगातार इम्तेहानगाह में है। इस तसव्वुर और यक़ीन के साथ क़ुरआन पढ़ने और क़ुरआन में ग़ौर व फिक्र ही के ज़रिये इन्सान क़ुरआन से हिदायत पा सकता है और ऐसे पढ़ने से ही यह उम्मीद की जा सकती है कि आदमी क़ुरआन से वह हक़ की रोशनी पा सकेगा, जिसके लिये क़ुरआन नाज़िल हुआ है।

गर तू मि खाही मुसलमाँ ज़ीस्तन
नीस्त मुम्किन जुज़-ब-क़ुरआँ ज़ीस्तन

– अल्लामा इक़बाल

(अगर तुम मुसलमान की हैसियत से ज़िन्दा रहना चाहते हो तो याद रखो कि ऐसी ज़िन्दगी क़ुरआन के बग़ैर मुम्किन नहीं हो सकती।)

दुनिया में हम न जाने कितनी किताबें पढ़ते–पढ़ाते हैं और कभी कभी तो पूरी ज़िन्दगी इसमें गुज़ार देते हैं और उसे अपनी सबसे बड़ी कामयाबी समझते हैं, मगर एक मोमिन को अगर कलामे इलाही के पढ़ने–पढ़ाने, उसको याद करने और समझने–समझाने का मौका न मिल पाये या इसके दिल में उसकी अज़मत न हो जो उसका तक़ाज़ा है तो फिर उसके लिये इससे बड़ी कोई महरूमी नहीं है, चाहे वह अपनी क़ाबिलियत में वक़्त का अफ़लातून (Plato) और धन दौलत में दुनिया का मालिक ही क्यों न हो।

(हज़रत मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह०)

(कुरआन मजीद की तालीम और उसकी अज़मत, पेज नं 2)